राजस्थान में शक्ति पूजा की परम्परा: लोक देवी करणी माता के विशेष संदर्भ में

डॉ. राकेश कुमार धाबाई
सहायक आचार्य
एस.एस.जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय
जयपुर
Email- rakeshdhabai78@gmail.com
Mob.: 9413561914

सार संक्षेप:

राजस्थान निर्माण से पूर्व (अर्थात् 1956 से पूर्व) यह अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था, जिन्हें रियासत कहा जाता था। इनमें से अधिकांश रियासतों में राजपूत शासक थे जिनमें शक्ति पूजा की परम्परा प्रमुख थी। अतः शक्ति पूजा एवं शाक्त सम्प्रदाय की परम्परा राजस्थान में विशेष रूप से प्रचलित रही है। इसी शक्ति पूजा की परम्परा में लोक देवी करणी माता का भी विशेष स्थान है। करणी माता राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र की प्रमुख देवी है जो जोधपुर तथा बीकानेर के राठौड़ वंश की आराध्य देवी है। इनका प्रमुख मंदिर बीकानेर से 30 कि.मी. की दूरी पर स्थित देशनोक नामक स्थल पर स्थित है। करणी माता चारण जाति की कुलदेवी है तथा इनके मंदिर का प्रमुख पुजारी भी चारण जाति का होता है। यह अपने चमत्कारों तथा सामाजिक सुधारात्मक कार्यों की वजह से लोकदेवी के रूप में प्रसिद्ध हुई जिसे शक्ति का अवतार माना जाता है। इनके मंदिर में असंख्य चूहे विद्यमान होने की वजह से इसे 'चूहों वाला मंदिर' कहा जाता है। इनकी राजस्थान में विशेष पूजा अर्चना की जाती है तथा वर्ष में दो बार विशाल मेला लगता है।

संकेताक्षर:

लोक देवी, राजपूताना, मारवाड़, आराध्य देवी, कुल देवी, काबा, मंड, देशनोक, सुवाप गाँव, चारण, ओरण, बारीदारी, देपावत।

राजस्थान में इस्लाम के प्रवेश तथा तुर्क आक्रमणों के कारण राजस्थान के जन-जीवन में एक नवीन परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। इस्लामिक संस्कृति के प्रभावों तथा रूढ़िवादीता के कारण लोगों का ध्यान आध्यात्मिक से हटने लगा। इसी कालखण्ड में कुछ ऐसे महान व्यक्तियों एवं महिलाओं का जन्म हुआ जिन्होंने अपने आचरण, आध्यात्मिकता, चमत्कारों एवं दृढ़ता से समाज को एक नई राह दिखाई जिसके कारण वे उन्हें समाज में लोक देवता तथा लोक देवियों का स्थान प्राप्त हुआ।[1] उन्हीं में से एक लोक देवी करणी माता है जिनकी राजस्थान मारवाड़ क्षेत्र विशेष मान्यता शक्ति के रूप में है। वर्ष में दो बार चैत्र तथा आश्विन में विशाल मेले लगते हैं।[2]

राजस्थान 1956 से पूर्व अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था जिन्हें रियासत कहा जाता था। इन रियासतों में से अधिकांश रियासतों में राजपूत शासको का शासन था इसी वजह से इसे जॉर्ज थॉमस ने

राजपूताना नाम दिया। राजपूत शासको में शक्ति पूजा की परम्परा विशेष रूप से प्रचलित रही है इसे शाक्त सम्प्रदाय के रूप में जाना जाता है।

राजस्थान में प्रचलित शक्ति पूजा की परम्परा में लोक देवियों की पूजा की परम्परा भी विशेष रूप से प्रचलित रही है। इन्हीं लोक देवियों में से एक प्रमुख आराध्य देवी करणी माता है इन्हें दुर्गा का अवतार माना जाता है। इनका मन्दिर बीकानेर के देशनोक नामक स्थल पर स्थित है अर्थात् राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र का यह एक प्रमुख शक्ति पीठ है जहाँ वर्ष में दो बार चैत्र तथा आश्विन महिने में विशाल मेले लगते है तथा लाखों की संख्या में लोग आते है जो इनकी मान्यता का प्रमुख उदाहरण है।[3]

राजस्थान की लोक देवी करणी माता का जन्म वि.सं. 1444 को सुवाप गाँव में आश्विन शुक्ल सप्तमी के दिन ब्रह्म मुर्हुत में आढ़ी देवल देवी के गर्भ से हुआ जिनके पिता का नाम मेहाजी था जो किनिया शाखा के चारण थे।[4] इनके जन्म के बारे में राजस्थानी लोक साहित्यों में निम्न उल्लेख प्राप्त होता है –

चकलू माढ़ावत री धिन आढ़ी देवल।
जिणरी कुंखे जलमिया, किनियाणी करनल्ल।।
चैदह सो चम्पालवे सातम सुकखार।
आसोज मास उजालपख, आई लियो अवतार।।[5]

करणी माता के बचपन का नाम रिद्धि बाई था। ये 151 वर्ष तक जिंदा रही तथा 23 मार्च 1538 में ज्योतिर्लिन हुई। इन्हें दुर्गा का अवतार माना जाता है। मारवाड़ क्षेत्र में अपने चमत्कारों तथा आध्यात्मिक कार्यों से विशेष प्रसिद्ध प्राप्त कर लोक देवी के रूप में मान्यता प्राप्त की जिसमें पिता को जीवनदान देना, सुवा ब्राह्मण को वरदान, तथा लाखण को जीवनदान दिलाना आदि प्रमुख घटनाऐं हैं।[6]

करणी माता के आशीर्वाद से राव जोधा ने 1459 ई. में जोधपुर की नींव रखी तथा मेहरानगढ़ बनवाया। करणी माता स्वयं जोधपुर गई तथा आशीर्वाद दिया। इसका उल्लेख मुहणोत नैणसी द्वारा रचित ''मारवाड़ा रा परगना री विगत'' ग्रंथ में मिलता है। 1465 ई. में बीकानेर की नींव राव बीका ने राज्य के रूप में रखी जिसमें करणी माता का आशीर्वाद प्रमुख माना गया।7 इन्हीं कारणों की वजह से आज भी जोधपुर तथा बीकानेर का राठौड़ वंश इन्हें अपनी आराध्यदेव एवं इष्टदेवी मानते हैं तथा पूजते हैं।[8]

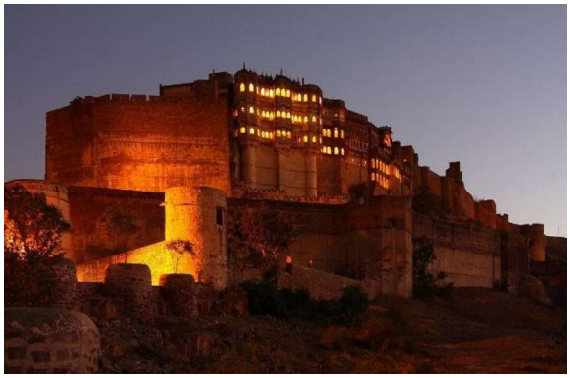

मेहरानगढ़ (जोधपुर)

जूनागढ़ (बीकानेर)

करणी माता जन्म मारवाड़ की चारण जाति में हुआ था। उन्हें चारण जाति की कुल देवी कहा जाता है।[9] इनका प्रमुख मंदिर बीकानेर से 30 किमी दूर देशनोक नामक स्थल पर स्थित है जिसकी स्थापना स्वयं करणी माता ने 1419 ई. में की थी। यहीं पर करणी माता ने मंदिर का निर्माण एक जाल वृक्ष के नीचे करवाया। इसे मंड कहा

जाता है।[10] कामराज मिर्जा पर जीत के बाद राव जैतसी ने इसके गर्भगृह के चारों ओर संरचना का निर्माण करवाया। वर्तमान स्वरूप बीकानेर के शासक महाराजा गंगासिंह जी द्वारा बनवाया गया। यह मन्दिर हिन्दू मन्दिर स्थापत्य तथा इस्लामिक स्थापत्य कला का मिश्रित रूप है। जहाँ मन्दिर की संरचना हिन्दू मंदिरों के समान है परन्तु मंदिर का शिखर गुम्बद के आकार का है। यह मंदिर सफेद संगमरमर का बना है जिस पर उकेरी गई मूर्तियों को विशेष कलात्मक महत्व है। ये मूर्तियां अत्यंत आकर्षक एवं सुन्दर है।[11] इस मंदिर का प्रमुख दरवाजा चाँदी का बना हुआ है।[12]

करणी माता के मंदिर की प्रमुख विशेषता इसमें विचरण करते लगभग 25000 चूहे हैं जिन्हें 'काबा' कहा जाता है। इन्हें चारण जाति के देपावत वंशजो का पुनर्जन्म माना जाता है अतः इनका इस मन्दिर में विशेष धार्मिक महत्व है। इनमें से कुछ सफेद चूहे है जिन्हें सफेद काबा कहा जाता है। इनके मंदिर में दर्शन का विशेष धार्मिक महत्व है। करणी माता को 'डाढ़ाली डोकरी', करणी जी महाराज, करणी माता, चूहों की देवी आदि नामों से भी जाना जाता है। इनके मन्दिर में प्रमुख पुजारी चारण जाति का व्यक्ति होता है जिसे 'बारीदारी' कहा जाता है।[12]

राजस्थान में करणी माता द्वारा समाज सुधार एवं पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित किये गये कार्यो की वर्तमान में भी प्रासंगिकता है क्योंकि इन्होंने देशनोक में लगभग 42 किमी. क्षेत्र में ओरण की स्थापना की जो पर्यावरण संरक्षण का प्रमुख कार्य है। समाज में पर्दा प्रथा विरोध किया, पुत्र-पुत्री के भेद को मिटाने का प्रयास, सर्व धर्म सम्भाव की स्थापना कर सामाजिक विभेद तथा असमानता को मिटाने का प्रयास किया। गायों की रक्षा तथा निम्नोत्थान का कार्य भी करणी माता ने विशेष रूप से किये जिनकी वर्तमान समाज के लिए भी महत्ती आवश्यकता है।[13]

राजस्थान की जोधपुर एवं बीकानेर रियासतों के अलावा अलवर रियासत के शासकों द्वारा भी करणी माता की पूजा एवं मान्यता का विशेष उल्लेख प्राप्त होता है। अलवर रियासत के शासक बख्तावर सिंह जी ने 1792 से 1815 में मध्य मन्नत पूरी होने पर बाला किले में करणी माता के मंदिर का निर्माण करवाया तथा पूजा-अर्चना प्रारम्भ की। इस प्रकार राजस्थान के विभिन्न भागों में करणी माता के मंदिर स्थित तथा उनकी शक्ति के रूप में पूजा की जाती है। ये राजस्थान की एक प्रसिद्ध लोक देवी है।[14]

संदर्भ ग्रंथ:

1. डॉ. कमलनयन शल्य; राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर, पृ.सं. 29.
2. डॉ. नरेन्द्र सिंह चारण; करणी माता का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ.सं. 14.
3. डॉ. हुकुम चन्द जैन; राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासत, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 372.
4. बालकृष्ण राव; राजस्थान में भ्रमण, वाङ्मय प्रकाशन, जयपुर, पृ.सं. 35-47.
5. डॉ. जी.एच. ओझा; बीकानेर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ.सं. 62.
6. डॉ. नरेन्द्र सिंह चारण; करणी माता के चमत्कार, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ.सं. 35.
7. मैधेसन सिल्विया ए.; राजस्थान राजाओ की भूमि, वेंडोम प्रेस, 1984, पृ.सं. 129-131.
8. डॉ. नरेन्द्र सिंह चारण; करणी माता का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ.सं. 40.
9. जनरल, भारत रजिस्ट्रार कार्यालय (1966) भारत की जनगणना-1961.
10. मैक्स, देशनोक करणी माता मंदिर और मध्यकालीन राजस्थान में राजनीतिक वैधता (दक्षिण एशिया: दक्षिण एशियाई अध्ययन जर्नल, 1993).
11. डॉ. नरेन्द्र सिंह चारण; करणी माता के चमत्कार, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ.सं. 35.
12. देशनोक मंदिर की यात्रा व साक्षात्कार।
13. नरेन्द्र सिंह चारण; करणी माता का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ.सं. 95.
14. पत्रिका न्यूज - 18 अक्टूबर 2020, करणी माता का अलवर का इतिहास एवं मान्यता।